न तुम बेवफा हो, ना हम बेवफा हैं..

दिनेश चौबे

एच.एम.वी. में पिछले दिनों अपनी लीजेंड्स श्रृंखला में 'मदन मोहन-द अनफॉर गेटेबल कम्पोजर' शीर्षक से पाँच कैसेटों का सेट जारी किया है। इस सिरीज में संगीतकारों पर जारी हुआ यह पहला सेट है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि मदन मोहनजी से इसका आगाज हुआ है। मदन मोहनजी एक विलक्षण संगीतकार, जिसकी प्रतिभा के सित्यासी कोहिनूर (गीत) इन कैसेटों में संग्रहित हैं। १९५१ से १९८० तक की तकरीबन पैंसठ फिल्मों के गीतों को इस सेट में सुना जा सकता है। यह सेट अभी तक जारी हुए लता मंगेशकर मो. रफी, किशोर कुमार, मुकेश, आशा भौंसले, मन्नाडे, के.एल. सहगल, हेमंत कुमार के

श्रद्धांजलि मदन मोहन

सेटों से बिलकुल जुदा है। इसमें मदन मोहनजी के संगीत के अलावा स्वयं उनकी आवाज के साथ-साथ उनके स्वरों में 'हमसफर साथ अपना छोड़ चले', 'उन आँखों में नींद', 'है इसी में प्यार की आबरू', 'आपके पहलू में आकर रो दिये', 'माई री मैं का से कहूँ', 'दिल ढूँढता है फिर वही', 'हुस्न हाजिर है', 'मेरे अश्कों का गम ना कर' आदि गीत सुने जा सकते हैं। मदनजी के रिकार्डिंग रूम से लिए गये गीतों को सुनना बेहद रोचक लगता है। सेट को एक प्रोग्राम की तरह प्रस्तुत किया गया है, जिसे स्वयं मदनजी कंडक्ट करते हैं। इसे सुनते हुए ऐसा लगता है कि या तो मदनजी स्वयं हमारे समक्ष कार्यक्रम दे रहे हैं अथवा हम उनके म्यूजिक शो के प्रत्यक्षदर्शी हैं। सेट की शुरुआत स्वयं मदनजी के स्वरों में होती है- 'मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि बहुत अरसे के बाद आज फिर आपसे मुलाकात हो रही है, जो गीत आपके सामने पेश कर रहा हूँ, वो सब सुरीले हैं, हिन्दुस्तानी हैं और जज्बाती हैं। मैं यह समझता हूँ हर फनकार का जज्बाती होना बहुत जरूरी है, क्योंकि अगर उसमें इनसानियत का जज्बा नहीं है, तो वह सही फनकार नहीं हो सकता है।' इसे लताजी आगे बढ़ाते हुए अपनी और मदनजी की पहली मुलाकात और इसके बाद बनने वाला ता-उम्र का नाता बयाँ करती हैं। इस दौरान पहली बार मदनजी बतौर गायक 'प्रीत लगाके मैंने यह फल पाया, सुध-बुध खोई चैन गँवाया' गाते हुए सुनाई पड़ते हैं। इसके बाद १९५१ में प्रदर्शित फिल्म 'अदा' के गीत 'साँवरी सूरत मन भाई' से गीतों की यात्रा शुरू होती है। गीत-दर-गीत श्रोता स्वर्ग के आर्तयक

वहीं', 'हुस्न हाजिर है', 'मेरे अश्कों का गम ना कर' आदि गीत सुने जा सकते हैं। मदनजी के रिकार्डिंग रूम से लिए गये गीतों को सुनना बेहद रोचक लगता है। सेट को एक प्रोग्राम की तरह प्रस्तुत किया गया है, जिसे स्वयं मदनजी कंडक्ट करते हैं। इसे सुनते हुए ऐसा लगता है कि या तो मदनजी स्वयं हमारे समक्ष कार्यक्रम दे रहे हैं अथवा हम उनके म्यूजिक शो के प्रत्यक्षदर्शी हैं। सेट की शुरुआत स्वयं मदनजी के स्वरों में होती है- 'मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि बहुत अरसे के बाद आज फिर आपसे मुलाकात हो रही है, जो गीत आपके सामने पेश कर रहा हूँ, वो सब सुरीले हैं, हिन्दुस्तानी हैं और जज्बाती हैं। मैं यह समझता हूँ हर फनकार का जज्बाती होना बहुत जरूरी है, क्योंकि अगर उसमें इनसानियत का जज्बा नहीं है, तो वह सही फनकार नहीं हो सकता है।' इसे लताजी आगे बढ़ाते हुए अपनी और मदनजी की पहली मुलाकात और इसके बाद बनने वाला ता-उम्र का नाता बयाँ करती हैं। इस दौरान पहली बार मदनजी बतौर गायक 'प्रीत लगाके मैंने यह फल पाया, सुध-बुध खोई चैन गँवाया' गाते हुए सुनाई पड़ते हैं। इसके बाद १९५१ में प्रदर्शित फिल्म 'अदा' के गीत 'साँवरी सूरत मन भाई' से गीतों की यात्रा शुरू होती है। गीत-दर-गीत श्रोता स्वर्ग के आर्तयक

सुख की पायदान चढ़ता चला जाता है। इस दौरान उसे कई बार दुनिया के बंधन बेमानी से लगते हैं। सुख देने वाले गीतों की सूची लम्बी है, मगर चंद का जिक्र आवश्यक है- 'साँवरी सूरत मन भाई', 'मेरी याद में तुम ना', 'चाँद मद्धम है', 'कदर जाने ना', 'दो घड़ी वो जो पास', 'कौन आया मेरे मनके द्वारे', 'हम प्यार में जलने वालों को', 'जमीं से हमें- आसमां पर', 'जाना था हमसे दूर', 'बैरन नींद ना आये', 'जारे बदरा बैरी' 'वो भूली दास्ताँ', 'भूली हुई यादों', 'है इसी में प्यार की आबरू', 'आपकी नजरों ने समझा', 'मैं तुम संग नैन मिला' 'नैना बरसे', 'लग जा गले', 'अगर मुझसे मोहब्बत है', 'रंग और नूर की बारात', 'वो चुप रहें तो', 'फिर वो हो शाम', 'जरा सी आहट होती है', 'एक हँसी शाम को', 'आपके पहलू में' 'मेरा साया साथ होगा', 'तुम्हारी जुल्फ के साये में', 'मेरी आवाज सुनो', 'ना तुम बेवफा हो', 'तेरी आँखों के सिवा', 'माईरी मैं कासे कहूँ', 'बइयाँ ना धरों', 'ये दुनिया ये महफिल', 'सिमटी सी शरमाई सी', 'तुम जो मिल गये हो', 'बेताब दिल की', 'दिल ढूँढता है', 'हुस्न हाजिर है', 'मेरे अश्कों का गम', 'हमारे बाद अब महफिल में' आदि गीत-गजल श्रोता को कलात्मक रूप से धनवान बना देते हैं। इन गीतों को सुनते-सुनते कब पाँच घंटे व्यतीत हो जाते हैं, पता ही नहीं चलता और संगीत के समक्ष समय बौना साबित हो जाता है।

अंत में एक बार फिर मदनजी अपनी जादुई आवाज में उभरते हुए कहते हैं- 'ये कुछ गाने थे, जो आपके समक्ष मैंने पेश किये और मैं समझता हूँ कि सुर जो है वो एक भगवान की देन है, उसको पेश करना, उसको सुनना, उसको अपनाना यह कुदरत की चीज है, जो कि इनसान सीखता नहीं, बल्कि उसे महसूस करता है। आपसे इजाजत चाहता हूँ, भगवान ने चाहा तो फिर मुलाकात होगी। तब तक खुश रहिये।' मदनजी की इस भावना के तुरंत बाद लताजी 'हमारे बाद अब महफिल में अफसाने बयाँ होंगे, बहारें हमको ढूँढेगी न जाने हम कहाँ होंगे' गाती हैं और पाँच घंटे तक चलने वाला यह सुरों का अद्भुत कारवाँ विराम लेता है। इस पाँच कैसेटों वाले सेट में एक लघु पुस्तिका भी समाहित है, जो मदन मोहनजी पर रोशनी डालती है। संगीत रसिकों, मदनप्रेमियों एवं शोधकर्ताओं के लिए यह महत्वपूर्ण है। इस सेट की कम्पाईलेशन का कार्य संजीव कोहली द्वारा किया गया है। वैसे तो यह समूची श्रृंखला ही संजीवजी द्वारा चयनित गीतों पर चल रही है, मगर इस सेट के गीतों में संजीवजी पिछले सभी प्रयासों से चार कदम आगे आये हैं। पाठकों को बताना आवश्यक है कि संजीव कोहली मदन मोहनजी के सुपुत्र हैं। यह कार्य वह इसलिए नहीं बेहतर कर पाये हैं कि उन्हें अपने पिताजी के सेट का निर्माण दूसरों से बेहतर करना था, बल्कि इस श्रृंखला के अंतर्गत काम आने वाली बहुत सी चीजों का घर में ही उपलब्ध होना इस सेट को अद्भुत बनाने में मददगार साबित हुआ। आज जहाँ बड़े से बड़े कलाकार के पुत्र अपने पिता के बारे में कहना-सुनना पसंद

सीखता नहीं, बल्कि उसे महसूस करता है। आपसे इजाजत चाहता हूँ, भगवान ने चाहा तो फिर मुलाकात होगी। तब तक खुश रहिये।' मदनजी की इस भावना के तुरंत बाद लताजी 'हमारे बाद अब महफिल में अफसाने बयाँ होंगे, बहारें हमको ढूँढेगी न जाने हम कहाँ होंगे' गाती हैं और पाँच घंटे तक चलने वाला यह सुरों का अद्भुत कारवाँ विराम लेता है। इस पाँच कैसेटों वाले सेट में एक लघु पुस्तिका भी समाहित है, जो मदन मोहनजी पर रोशनी डालती है। संगीत रसिकों, मदनप्रेमियों एवं शोधकर्ताओं के लिए यह महत्वपूर्ण है। इस सेट की कम्पाईलेशन का कार्य संजीव कोहली द्वारा किया गया है। वैसे तो यह समूची श्रृंखला ही संजीवजी द्वारा चयनित गीतों पर चल रही है, मगर इस सेट के गीतों में संजीवजी पिछले सभी प्रयासों से चार कदम आगे आये हैं। पाठकों को बताना आवश्यक है कि संजीव कोहली मदन मोहनजी के सुपुत्र हैं। यह कार्य वह इसलिए नहीं बेहतर कर पाये हैं कि उन्हें अपने पिताजी के सेट का निर्माण दूसरों से बेहतर करना था, बल्कि इस श्रृंखला के अंतर्गत काम आने वाली बहुत सी चीजों का घर में ही उपलब्ध होना इस सेट को अद्भुत बनाने में मददगार साबित हुआ। आज जहाँ बड़े से बड़े कलाकार के पुत्र अपने पिता के बारे में कहना-सुनना पसंद

नहीं करते (दिखावा छोड़ दें तो) ऐसे में संजीव कोहली जैसा भगीरथी पुत्र होना मदनजी के लिए गर्व की बात है। मदनजी को इन तमाम रचनाओं को 'डिजीटली रिमास्टर्ड' कर एवं उनसे बातों और लता मंगेशकर, बेगम अख्तर, मन्नाडे, जयदेव, जाकिर हुसैन, माला सिन्हा, जगजीतसिंह, जतिन ललित, महेंद्र कपूर, शिवकुमार शर्मा, मजरूह सुल्तानपुरी, आदेश श्रीवास्तव, उत्तमसिंह एवं आशा भौंसले, आरडी. बर्मन, गुलजार की भावांजलि प्रस्तुत सेट को अद्वितीय बना दिया है।